

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

दिपावली साधनाएं – २०२५

१८-१०-२०२५ से २३-१०-२०२५

धनत्रयोदशी - १८-१०-२०२५ (सायं काल)

नरक चतुर्दशी - २०-१०-२०२५ (अभ्यांग स्नान)

दिपावली पूजन - २१-१०-२०२५ (लक्ष्मी कुबेर पूजन)

बलिप्रतिपदा(बहिपूजा) - २२-१०-२०२५

यम द्वितीय - २३-१०-२०२५

दिपावली पूजन मुहूर्त- २१-१०-२०२५

वृषभ लग्न - ७:१८ PM से ९:१८ PM

सिंह लग्न – १:४३ AM से ३:५० AM (मध्यरात्रि)

धनत्रयोदशी साधना:

१) विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर, घर में आज के संध्या समय में गुरु चित्र और कुबेर यंत्र स्थापित कर उसकी पूर्ण पूजन कर, गुरु मंत्र का जप कर और कमल बीज माला से ५ माला जप करे | यह विधान करने से आय के स्रोत बढ़ जाते है या नुतन / नवीन मार्ग मिल जाता है | अगर कही अपना धन अटक् गया हो तो, पुनः प्रप्ती में सहायक होता है |

मंत्र: ॥ ॐ अक्षय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादिपतये धनधान्य समृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा ॥

सामाग्री: कुबेर यंत्र, कमल बीज माला

जप संख्या: ५ माला

२) व्यापार बाधा निवारण एवं उन्नती :

चरण एक :

विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर , सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार का पूजन करे ,गुरु मंत्र का जप कर , निम्न साधना प्रारंभ करे | घर में या पुजा स्थान पर तीन मिट्टी के दीपक जला ले जिस में किसी भी प्रकार का तेल उपयोग कर सकते है | हर दीपक में एक-एक सिद्धि फल डाल दे और इच्छा करे की व्यापार में जो भी बाधा है वह दूर हो | अब उन तीनों सिद्धि फलों की पूजा काजल एवं अक्षत से करे और तीन माला हर दीपक पर त्राटक करते हुये , कुल ९ माला जप आसमानि या सुलेमानि हकीक माला से करे | जप के बाद तीनों दीपक घर के बाहर फेंक दे (सिद्धि फल सहित) और पैर धो कर पूजा स्थान पर बैठ जाये | इस चरण मे जप दक्षिणाभिमुख होकर करे |

मंत्र: || ॐ आकर्षय स्वाहा ||

सामाग्री: सिद्धि फल, आसमानि या सुलेमानि हकीक माला

जप संख्या: तीन माला हर दीपक पर , कुल ९ माला

चरण दो :

विधान: चरण एक पूर्ण होने पर साधक पुनः पूजा स्थान पर बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर कुबेर यंत्र स्थापित करे और उसकी पूर्ण पुजा करे एवं मिष्ठान्न का भोग लगाये | धूप एवं धृत का दीपक लगा कर पिली हकीक माला से ११ माला जप करे | पूर्वाभिमुख हो कर जप करे और साधना संपन्न होने पर यंत्र को व्यापार या घर पर स्थापित करे |

मंत्र: ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्टलक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय पूरय नमः ॥

सामाग्री: कुबेर यंत्र, पिली हकीक माला

जप संख्या: ११ माला

३) धनवन्तरी रोग एवं शरीर बाधा निवारण हेतु:

विधान: इस दिन साधक स्नानादि से निवृत्त होकर गुरु चित्र और लक्ष्मी-नारायण चित्र / विग्रह की पूर्ण पूजन कर, गुरु मंत्र का जप कर , निम्न साधना प्रारंभ करे | वैजयन्ति माला से ५ माला जप पूर्व की ओर मुख कर जप करे | साधना के उपरान्त माला ४० दिनो तक गले में धरण करे और बाद मे विसर्जित करे |

मंत्र: ॥ ॐ ह्रीं धनवन्तर्यै ह्रीं नमः ॥

सामाग्री: लक्ष्मी-नारायण चित्र या विग्रह, वैजयन्ति माला

जप संख्या: ५ माला

४) दक्षिणावर्ति शंख साधना:

इस दिन दक्षिणावर्ति शंख साधना, सर्वश्रेष्ठ माना गया है | शंख देव श्रीलक्ष्मी देवी के भ्राता है | यह शंख घर पर स्थापित रहना अत्यन्त शुभ माना गया है | इस तरह का शंख लाकर शुद्ध गाय के दूध से अभिषेक करे और उस पर चांदी का वरक लगा दे (सभि और चिपका दे) और उस पर केसर से "श्री" अक्षर लिख दे | बाद में निम्न लिखे मंत्र से सभी उपचार करे (गंध, हल्दी, कुंकुम, केसर, धूप, दीप आदि) |

पूजन मंत्र: || ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाय पयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः ||

इत्र एवं दूध का बना प्रसाद का भोग लगाये और ५ माला जप कमलबीज माला से जपे |

मंत्र: || ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण मुखाय शंखानिधये समुद्रप्रभावय शंखाय नमः ||

तीन या पांच दिनों तक वही रहने दे और बाद में तिजोरी या पुजा स्थान में स्थापित करे | इस साधना से घर पर शांति बनी रहती है और घर में लक्ष्मी जी का वास निरन्तर बना रहता है |

५) श्री यंत्र (किसी भी प्रकार का) के सामने इच्छापूर्ति नारियल रख कर १०८ माला "श्रीं" मंत्र का जप करने से, कोई भी शुभ इच्छा पूर्ति में सहायक होती है |

६) त्रयोदशी से ले कर भाई दूज तक इच्छापूर्ति नारियल लक्ष्मी-नारायण चित्र के सामने रख कर, कमलबीज माला से नित्य ५१ माला जप करने से गृह संबंधित समस्या दूर होती है |

मंत्रः ॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः श्रीं ॐ ॥

सामाग्रीः इच्छापूर्ति नारियल, लक्ष्मी-नारायण चित्र, कमलबीज माला

जप संख्याः नित्य ५१ माला

नरक चतुर्दशी साधना/ विधिः

ब्रह्म मुहूर्त मे उठ कर स्नानादि से निवृत्त होकर गुरु,कुल देवता एवं लक्ष्मी-नारायण की पुजा करे और अंत में निम्न मंत्रो से यम देवता को तर्पण दे। पिता जीवित हो तो अक्षत, नही तो तील से तर्पण करे ।

॥ ॐ यमं तर्पयामि ॥

॥ ॐ धर्मराजं तर्पयामि ॥

॥ ॐ मृत्युं तर्पयामि ॥

॥ ॐ अंतकं तर्पयामि ॥

॥ ॐ वैवस्वतं तर्पयामि ॥

॥ ॐ कालं तर्पयामि ॥

॥ ॐ सर्वभूतक्षरं तर्पयामि ॥

॥ ॐ औदुंबरं तर्पयामि ॥

॥ ॐ दध्नं तर्पयामि ॥

॥ ॐ नीलं तर्पयामि ॥

॥ ॐ परिमेष्ठिनं तर्पयामि ॥

॥ ॐ वृकोदरं तर्पयामि ॥

॥ ॐ चित्रं तर्पयामि ॥

॥ ॐ चित्रगुप्तं तर्पयामि ॥

बाद में निम्न श्लोक ११ बार पढे ।

यमोनिहंता पितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः ।

भूताधिपो दत्त कृतानुसारी कृतांत एतद्दशभिर्जपंति ॥

उपरि विधान करने समय अपने सामने लाल कपडे पर तांत्रोक्त नारियल लाल कपडे पर स्थापित करे और उसकि पूजा लाल वस्तुओ से (अक्षन्त,कुंकुम,लाल पुष्प,लाल फल) करे और तिथि उपरान्त इस नारियल को किसी ब्रह्मण को दान में दे तो अपमृत्यु का नाश होता है ।

दीपावली साधना / पूजन विधान:

१) प्रति वर्ष जो लोग दीपावली लक्ष्मी पूजन करते है, वो इस दिन दिये गये मुहूर्त पर पूजन सपरिवार कर सकते है | इस दिन परंपरा अनुसार, लक्ष्मी नारायण जी के श्री सूक्त एवं लक्ष्मी सूक्त से पूर्ण पूजन कर सामुहिक विधि अपनाई जाति है | निम्न मंत्र की १६ माला जाप पूजन के उपरांत कमलबीज माला से करने से लक्ष्मी कृपा बनी रहती है |

मंत्र: ॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

सामाग्री: कमलबीज माला

जप संख्या: १६ माला

२) इस दिन साधक श्री यंत्र / पारद श्री यंत्र / लक्ष्मी यंत्र स्थापित कर श्री सूक्त को १६ पाठ करने से घर मे लक्ष्मी का वास रहता है |

३) इस दिन कुबेर-लक्ष्मी-गणपती की पूजा करे | निम्न मंत्र को मुंगा माला से २१ माला जप करने से लक्ष्मी की चंचलता कम होती है, एवं घर में लक्ष्मी स्थाई निवास करती है |

मंत्र: ॥ ॐ श्रीं गं लक्ष्मी गणपत्यै नमः ॥

जप संख्या: २१ माला

४) कुबेर-लक्ष्मी पूजन कर ,कुबेर एवं लक्ष्मी मंत्र के १६-१६ माला जप करे और बाद में उन्ही मंत्रो से १०८-१०८ आहुती कमलबीज से हवन करने से आर्थिक उन्नति होती है | जप कमलबीज माला से करे |

बलिप्रतिपदा - विधी:

१) इस दिन अभ्यांग स्नान कर पूजन आदि से निवृत्त होकर सकुटुंब भोजन आदि ग्रहण करे | कुटुंब तंत्र के अनुसार सकुटुंब भोजन ग्रहण करने से परिवार में एकता बनी रहती है एवं घर में शांति स्थापित होती है |

२) व्यापारी इस दिन गणपती-लक्ष्मी सरस्वती की पूजन कर नूतन बहिखाते लिखना आरंभ करते है |

यम द्वितिया साधना:

१) अपमृत्यु निवारण हेतु , नरक चतुर्दशी तर्पण विधि आज / इस दिन करना श्रेष्ठ माना गया है |

विशेष:

१) दीपावली के दिन पति अपनी पत्नी को ही लक्ष्मी मान कर पूर्ण सत्कार करे |

२) बलिप्रतिपदा के दिन पत्नी अपने पति को नारायण मान कर सेवा सत्कार करे |

३) यम द्वितिया के दिन बहन-भाई एक दूसरे का आदर-सत्कार करे और घर के बडो का आशीर्वाद ले |

४) दीपावली के पांचो दिन सपरिवार भोजन ग्रहण करने से आपस मे प्रेम बढ़ता है |
